पाठ - 23 गजानन माधव मुक्तिबोध

मुख्य भाव

मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता 'मुझे कदम-कदम पर' एक श्रेष्ठ रचना है जिसमें आजादी के बाद की मनःस्थिति और सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं का चित्रण है। यहाँ कविता की रचना -प्रक्रिया का प्रस्तुतीकरण करते हुए स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक स्थान पर विषय उपलब्ध हैं , छोटी-छोटी घटनाएं महत्वपूर्ण घटनाएँ चारों तरफ विद्यमान हैं। जीवन की वास्तविकता इतनी व्यापक है कि लेखक या कवि को पग-पग पर चौराहे, सौ-सौ राहें और नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय रोज़-रोज़ मिलते हैं। परन्तु उपयुक्त विषय के चयन करने की चुनौती है जो रचनाकार की कुशलता और अनुभव पर निर्भर करती है।

मुख्य विशेषताएं

- कवि ने जिन चौराहों के कदम-कदम पर मिलने की बात कही है, वे कवि को चयन की चुनौती के रूप में अक्सर सामने खड़े नज़र आते हैं और वह अपनी चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ कर देता है। विचारों का क्रम ज़रा-सा आगे बढ़ता है, तो उसे और सौ राहें निकलती नज़र आती हैं। कवि उन सभी राहों पर चलना चाहता है अर्थात् उन सभी से गुज़रना चाहता है, उन सभी के अनुभव प्राप्त करना चाहता है। वह उन सभी अनुभवों को सँजोकर रखना चाहता है। अधिक से अधिक अनुभव इकट्ठे करने के चक्कर में वह समाज के हर एक व्यक्ति से मिलता है। उसका मन सभी से मिलकर बात करने के लिए छटपटाता है। वह हर बात की तह में उतरकर बात की सच्चाई जान लेना चाहता है। यह सोचकर कि न जाने किस व्यक्ति के अनुभवों में विचित्रता, विशिष्टता हो, वह उन सभी के पास जा-जाकर उनके दुख-सुख बाँट लेना चाहता है।
- कवि प्रश्न करता है कि साधारण-सा दिखने वाला पत्थर भी कहीं हीरा तो नहीं! अर्थात् सड़क पर आता-जाता साधारण-सा दिखने वाला व्यक्ति कहीं महत्त्वपूर्ण और विशेष तो नहीं। यहाँ कवि को लगता है कि समाज का हर व्यक्ति चमकता हुआ हीरा है। ठीक उसी प्रकार जीवन-जगत में छोटा-सा महसूस होने वाला महत्त्वहीन अनुभव कभी-कभी समय आने पर विशिष्ट हो जाता है और किसी महत्त्वपूर्ण घटना को जन्म दे देता है।
- कवि का मानना है कि प्रत्येक प्राणी के वक्षस्थल में एक अधीर आत्मा विद्यमान है, जो कुछ-न-कुछ कर गुज़रने को लालायित है। कवि को हर मुस्कराते चेहरे से प्रेम की निर्मल धारा फूटती नज़र आती है। उसे यह भी भ्रम होता है कि हर व्यक्ति के अंतर्मन में बहुत-से पीड़ादायक और साथ-साथ खुशी के अनुभव विद्यमान हैं, यदि वह उन्हें लिखने बैठे तो रामायण या महाभारत जैसे महाकाव्य की रचना हो सकती है।
- कवि कहता है कि ज़िंदगी के खेल ही निराले हैं। जो दूसरों के दुखों को अपना मानकर जीते हैं; समाज का व्यक्ति उसे बेवकूफ़ करार देता है। कवि को लगता है सभी लोग उसे बेवकूफ़ समझकर ठगते हैं, पर उसे अपने ठगे जाने में कोई परेशानी नहीं होती और वह उसमें अत्यधिक खुशी का अनुभव करता है और अपूर्व आनंद की प्राप्ति कर पागल-सा हो जाता है।

- वह सोचता है कि मेरे अंदर एक प्रसन्नचित्त मूर्ख बैठा है, जो दूसरों से ठगे जाने पर भी खुश होता है। यह अनुभव उसे और भी अजीब और अटपटा लगता है कि समाज अपने आप में सिमटता जा रहा है। उसे रचनाकार की समस्या से कुछ भी लेना देना नहीं है।
- रचनाकार को व्यक्तियों के दुख-दर्द की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। यहीं पर समाज के लोग तरह-तरह की शिकायतें करते हैं। ये शिकायतें कभी सरकारी काम-काज की व्यवस्था पर हो सकती हैं या फिर अनुशासन चलाने वाले लोभी या गिरते हुए सामाजिक मूल्यों पर भी हो सकती हैं। विभिन्न व्यक्तियों का अहंकार भरा काला चिट्ठा भी इसी चौराहे पर सुनने को मिलता है।
- आगे कवि कहता है कि इन सभी जटिलताओं से जकड़े अनुभवों और व्यक्तियों के चेहरों की स्मृतियाँ लेकर जब वह घर लौटता है तो विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियाँ घर के द्वार पर आकर कहती हैं कि हमारी संख्या इतनी अधिक हैं कि सौ वर्ष तक प्रयोग करने पर भी समाप्त नहीं होंगी ।
- घर पर आकर भी विचारों का यह क्रम आगे बढ़ता चला जाता है, यहाँ पर भी तरह-तरह के अनुभव और चिंतन की धाराएँ आकर खुले दिल से उसका स्वागत करती हैं। जिस प्रकार वृक्ष से अनेक शाखाएँ निकल कर चारों ओर फैलती हैं, उसी प्रकार कवि के आत्म-चिंतन का क्रम भी आगे बढ़ता चला जाता है, फैलता जाता है। प्रतिदिन, प्रतिपल नए-नए विषय अचानक कवि के सम्मुख आ जाते हैं।
- अंत में, कवि कहता है कि आज रचनाकार के पास विषयों का अभाव नहीं है। विषयों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु समस्या केवल सही और उपयुक्त चुनाव की है। सही विषय का चुनाव करने का काम रचनाकार के लिए बहुत कठिन कार्य है।

शिल्प- सौंदर्य

- यह कविता स्वयं को केंद्र में रखकर रची गई है। अतः यह आत्मपरक संरचना की कविता है। इस कविता में 'मैं' शब्द के साथ कवि अपने जैसे व्यक्तियों को लेकर अपनी बात कहना चाह रहा है।
- कविता में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। कलात्मक होते हुए भी यह कवि के भावों को पूरी सामर्थ्य के साथ अभिव्यक्त करती है।कवि ने अभिव्यक्ति के अनुकूल ही भाषा के तत्सम और आम भाषा के शब्दों का भरपूर परंतु संतुलित प्रयोग किया है।
- कविता में चौराहे विकल्पों का प्रतीक है और बिंब-विधान का भी बहुत सुंदर चित्रण हुआ है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. कवि ने इस कविता के माध्यम से क्या संदेश दिया है?
2. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि आज के समाज में विषयों कि कमी नहीं है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
3. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता के शीर्षक की महत्ता स्पष्ट कीजिए।